करा दी गई तो इनमें आलस घर करता गया। इनके स्वास्थ्य का स्तर गिरता गया। जैसा कि मानव स्वभाव शुरू से ही रहा है, कि एक दूसरे की नकल करने प्रवृति के चलते ये आधुनिक समाज की कई बुराईयों का शिकार हो गए। इनके खान–पान और दिनचर्या में बदलाव आने के चलते इनका जीवन प्रभावित हुआ। आधुनिक समाज की बुराईयों के साथ यहां पनपने वाली बीमारियां भी उन तक पहुंच गई। ऐसे में उनकी मृत्यु दर बढ़ना स्वाभाविक था।

इन सब बातों को देखते हुए प्रशासन ने उनके स्वास्थ्य और अन्य हितों की सुरक्षा के लिए विशेष सुविधाएं जुटाने का फैसला किया। पोर्ट ब्लेयर के जी.बी.पंत अस्पताल में आदिम जनजाति के लोगों के लिए विशेष वार्ड निश्चित किया गया है। इसी तरह जारवाओं के लिए उनके निवास क्षेत्रों के निकट पड़ने वाले क्षेत्र टुसनाबाद के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में एक विशेष चिकित्सा वार्ड उपलब्ध कराया गया है। इसी तरह कदमतला के प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में एक वार्ड इनके लिए रखा गया है। बाराटांग के प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र में भी इनके लिए विशेष चिकित्सा कक्षों का निर्माण प्रगति पर है। ये सभी वार्ड पर्यावरण हितैषी है।

ग्रेट अंडमानी, आलस व आश्रित लक्षण का शिकार न हो पाए इसलिए उन्हें ऐसे कार्य दिए जाने की योजना है जिससे वे स्वयं कार्य में लगकर लाभ कमा सके। जैसे – नारियल बागान के विकास के साथ ही वनस्पतियां उगाने, मधुमखी, शुअर व मुर्गीपालन आदि।

इसी तरह ओंगियों को नारियल के बागानों मे लगाया गया, ताकि मेहनत के बदले उन्हें वित्तीय लाभ भी हो सके। डूगोंग क्रीक में दवाखाना और साऊथ बे के कबीले के लिए लिटिल अंडमान का प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, उनकी स्वास्थ का जिम्मा लिए हुए हैं।